Hindi transcript of Sh. Harsh Mander's speech at Jamia Milia Islamia University on 16.12.2019

मैं सबसे पहले एक नारा उठाऊंगा, ये लड़ाई किसकी, किसके लिए लड़ाई है और किसकी लड़ाई है. ये लड़ाई पहले हमारे देश के लिए है. फिर हमारे संविधान के लिए है. और उसके बाद ये लड़ाई मोहब्बत के लिए है.

इस सरकार ने ललकार और जंग छेड़ा है ना सिर्फ इस देश के मुसलमान भाई और बहनों के ख़िलाफ़, उन्होंने जंग छेड़ा है इस पूरे देश की जो कल्पना थी. ये मुल्क आज़ादी की लड़ाई के दौरान एक तसव्वुर था हमारा कि हम अंग्रेजों के जाने के बाद किस तरह का देश बनाएंगे? और हमारी ये कल्पना थी, हमारा ये विश्वास था कि हम ऐसा देश बनाएंगे, जहां कोई फर्क नहीं पड़ेगा कि आप इस भगवान को मानें या उस अल्लाह को मानें या किसी को ना मानें. कोई फर्क नहीं पड़ेगा कि आप इस जाति के हैं या वो भाषा बोलते हैं, आप ग़रीब हों या अमीर हों. औरत हों या मर्द हों, आप हर तरह से, हर तरह से बराबर के इंसान हैं. बराबर के इस देश के नागरिक हैं. इस देश पर आपका उतना ही हक है जितना किसी और का.

आज जब इस देश के मुसलमानों से सवाल पूछा जा रहा है कि आप अपने इस देश के प्रति अपनी मोहब्बत को साबित करें. सवाल ये है कि पहले वो लोग ये सवाल पूछ रहे हैं जिन्होंने आज़ादी की लड़ाई में कभी भी हिस्सा नहीं लिया कोई कुर्बानी नहीं दिया.

जो यहां मुसलमान भाई और बहन हैं, मेरे बच्चे हैं, आपलोग इंडियन बाइ च्वाइस हैं, हम बाकी लोग इंडियन बाइ चांस हैं. हमें कोई च्वाइस नहीं थी. हमारे

लिए यही एक देश था. आपलोगों के पास च्वाइस था और आपके पूर्वजों ने ये देश चुना है. आज जो सरकार में हैं, वो साबित करने की कोशिश कर रहे हैं कि जिन्ना सही थे और महात्मा गांधी ग़लत थे. उनके पार्टी का नाम भारतीय जनता पार्टी से बदलके भारतीय जिन्ना पार्टी बनाना चाहिए. क्योंकि जिन्ना साहब ने कहा था कि ये हिन्दुस्तान एक देश नहीं, दो देश हैं- मुस्लिम पाकिस्तान और हिन्दू हिन्दुस्तान. हम ये कहते हैं कि ये एक ही देश है- हिन्दुस्तान और इस देश से, इस देश पर, इस देश के मुसलमान, हिन्दू, सिख, ईसाई, बौद्ध, नास्तिक, आदिवासी, दलित, ग़रीब-अमीर, महिला-पुरुष सबको हर तरह से बराबर का हक है और कोई किसी को, जो आपसे यह सवाल पूछता है और आपके हक वापस देने का दावा करता है, उनका विरोध, ये पूरे देश में एक सैलाब शुरू हुआ है और ये अपने देश के संविधान और अपने संविधान की आत्मा, जो मोहब्बत है, जो बंधुता है उसको बचाने के लिए है. उसको बचाने के लिए हमलोग सब सड़क पर निकले हैं और निकले रहेंगे. देखिए, ये लड़ाई संसद में नहीं जीती जाएगी क्योंकि हमारे जो राजनीतिक दल हैं, जो अपने आप को सेक्युलर कहते हैं उनमें उस तरह की नैतिक साहस नहीं रही, लड़ने के लिए.

ये लड़ाई सुप्रीम कोर्ट में भी नहीं जीती जाएगी क्योंकि हमने सुप्रीम कोर्ट को देखा है पिछले एनआरसी के मामले में, अयोध्या के मामले में, कश्मीर के मामले में. सुप्रीम कोर्ट ने इंसानियत और समानता और सेक्युलरिज़्म की रक्षा नहीं की है. वहां हम कोशिश जरूर करेंगे, हमारा सुप्रीम कोर्ट है, लेकिन फैसला ना संसद, ना सुप्रीम कोर्ट में होगा. इस देश का क्या भविष्य होगा, आपलोग सब नौजवान हैं, आप अपने बच्चों को किस तरह का देश देना चाहते हैं, ये फ़ैसला कहां होगा? एक- सड़कों पर होगा. लेकिन, उस, और हमलोग सब सड़कों पर निकले हैं. लेकिन सड़कों से भी बढ़के एक और जगह में इसका फ़ैसला होगा. कौन सी जगह में इस लड़ाई का फ़ैसला सबसे ज्यादा होगा- वो

है अपने दिलों में. मेरे दिल में, आपके दिल में. हमें इसका जवाब अगर वो नफ़रत भरना चाहते हों, हम उसका जवाब अगर नफ़रत से हीं देंगे तो नफ़रत ही गहरा होगा. अगर देश में कोई अंधेरा कर रहा है और हमलोग कहेंगे कि हम और अंधेरा करेंगे लड़ने के लिए, तो अंधेरा तो और गहरा ही होगा. अगर अंधेरा है तो उसका सामना सिर्फ चिराग़ जलाने से है. और पूरी बड़ी आंधी है, उसमें हम अपना चिराग जलाएंगे. उसी से यह अंधेरा ख़त्म होगा इसलिए उनके नफ़रत का जवाब हमारे पास एक ही है, और वो है- मोहब्बत!

वो हिंसा करेंगे, हिंसा के लिए हमें भड़काएंगे, हम हिंसा कभी ना करें. आप जरूर समझिए कि ये उनकी साजिश है आपको हिंसा के लिए भड़काएंगे. हम भड़केंगे, हम 2 प्रतिशत हिंसा करेंगे वो 100 प्रतिशत जवाब देंगे. गांधी जी से हमने सीखा है कि हिंसा का और नाइंसाफी का जवाब, सबसे ज्यादा जवाब अपने अहिंसा से हमें लड़ना है. कभी भी किसी को भी आपको हिंसा के लिए और नफ़रत के लिए जो कोई भड़काए, वो आपका साथी नहीं है.

मैं एक नारा दूँगा. संविधान- (जिंदाबाद)

बहुत बहुत शुक्रिया!

English transcript of Sh. Harsh Mander's speech at Jamia Milia Islamia University on 16.12.2019

I will first raise a slogan. Who is this fight for? Whose fight is this? This fight is first for our country, then for our Constitution, and then for love. This government has thrown a challenge and has begun a fight not just against the Muslim brothers and sisters of this country, but has also begun a fight against the way this country was imagined. During the freedom struggle, there was an imagination of India, an imagining of what kind of a country ours would be after the British left.

Our imagination, our belief was that we would build a nation where it would not matter whether you believed in Bhagwaan or Allah or didn't believe in anyone. It would not matter what jaati you belonged to or what language you spoke. It would not matter if you were rich or poor, female or male. You would be considered an equal human being in every way, and an equal citizen of this country. You would have as much right to this country as anyone else.

Today, when the Muslims of this country are being asked to prove their love for this country, the question arises that this demand is being made by people who never participated in the freedom struggle and made no sacrifices.

The Muslim brothers and sisters and children who are present here, are my children, you are Indian by choice. The rest of us are Indians by chance. We had no choice. We had only this country. You had a choice and your ancestors chose this country.

Today, those who are in the government are trying to prove that Jinnah was right and Mahatma Gandhi was wrong. The name of their party should be changed from Bharatiya Janata Party to Bharatiya Jinnah Party. Mr Jinnah had said that India is not one country but two: Muslim Pakistan and Hindu India.

What we are saying is that this is one country: Hindustan, and those from this country – Muslims, Hindus, Sikhs, Christians, Buddhists, atheists, Adivasis, Dalits, rich, poor, man, woman, all – have equal rights on this country.

Anyone who asks you these questions and claims to take away your rights is being challenged by a flood across this country to [protect the Constitution of the country and to protect the soul of the Constitution, which is love and fraternity.

To protect it, we have come out on the streets and will remain here.

This fight cannot be won in the parliament because our political parties, who declare themselves secular, do not have the moral strength to take up the fight.

This fight can also not be won in the Supreme Court because, we have seen in - the case of the NRC, Ayodhya and Kashmir, the Supreme Court has not protected humanism, equality and secularism. We will certainly try in the Supreme Court, it is our Supreme Court after all. However, the final decision will be given neither by the Parliament nor by the Supreme Court.

What will be the future of the country? You are young people – what kind of a country do you want to leave for your children? Where will this

decision be made? On the one hand, the decision can be taken on the streets. We are all out on the streets. However, there is one more space, bigger than the streets, where this decision can be taken. What is this space where the solution to this fight can be found? It's in our hearts – in my heart and your heart.

If they want to reply to us with hatred and we respond likewise with hatred, hatred will deepen. If there is someone spreading darkness in the country and we say that we will spread more darkness to fight, then of course that darkness will deepen. If there's darkness, it can be countered only by lighting a lamp, and there is a large storm, in that we will light our lamps. That's how darkness can be defeated. This is why we have only one answer to their hatred, and that answer is love.

They will cause violence, they will incite us to violence, but we will never commit violence. Please do understand that it is their ploy to incite you to violence. If we respond with violence, we will create 2% violence and they will respond with 100% violence.

We have learnt from Gandhi what violence and injustice can do.

The answer to injustice, is to fight with non-violence (ahimsa). If anyone ever provokes you to violence and hatred, then they are no friend of yours.

I will raise a slogan now: Constitution

[crowd responds] Long live (Zindabad)

Thank you.